UGC ने राजस्थान के तीन विश्वविद्यालयों में Ph.D. प्रवेश रोके

चर्चा में क्यों?

[विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)](https://www.drishtiias.com) ने राजस्थान के तीन विश्वविद्यालयों को नए **Ph.D. छात्रों को प्रवेश देने से रोक दिया है।** यह कार्रवाई **फर्जी और पिछली तारीख की डिग्री जारी करने के आरोपों की जाँच के बाद की गई है।**

मुख्य बिंदु

- **प्रभावित विश्वविद्यालय:** जिन संस्थानों पर नए Ph.D. छात्रों को दाखिला देने पर रोक लगाई गई है, वे हैं **OPJS विश्वविद्यालय, चूरू, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर और सिधानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू।**
- **आरोप: UGC द्वारा नियुक्त** एक स्थायी **समिति** ने पाया है कि तीनों विश्वविद्यालयों ने **UGC Ph.D. विनियमों** और Ph.D. डिग्री प्रदान करने के **शैक्षणिक मानदंडों के प्रावधानों का पालन नहीं किया।**
- **UGC की कार्रवाई: स्थायी समिति ने** अनुशंसा की है कि **UGC** इन विश्वविद्यालयों को **अगले पाँच वर्षों** तक **Ph.D. छात्रों के नामांकन से रोक सकता है।**
- **निहितार्थ:** यह घटना राजस्थान में उच्च शिक्षा संस्थानों की गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर चिंता उत्पन्न करती है।
- इसमें शैक्षणिक मानकों को बनाए रखने और छात्रों के हितों की रक्षा के लिये कठोर निगरानी की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)

- UGC **28 दिसंबर, 1953** को अस्तित्व में आया और **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 के तहत** विश्वविद्यालय शिक्षा में **शिक्षण, परीक्षा** और **अनुसंधान** के मानकों के **समन्वय, निर्धारण और रखरखाव** के लिये भारत सरकार का एक **सांविधिक संगठन बन गया।**
- UGC **शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करता है,** केंद्र सरकार **UGC में एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष** और दस अन्य सदस्यों की नियुक्ति करती है।
  - अध्यक्ष का चयन ऐसे लोगों में से किया जाता है जो केंद्र सरकार या किसी राज्य सरकार के अधिकारी नहीं होते।
- पात्र विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को **अनुदान प्रदान करने** के अलावा, आयोग उच्च शिक्षा के विकास के लिये आवश्यक उपायों पर केंद्र और राज्य सरकारों को सलाह भी देता है।
- यह नई दिल्ली के साथ-साथ अपने छह क्षेत्रीय कार्यालयों से कार्य करता है जो बेंगलुरु, भोपाल, गुवाहाटी, हैदराबाद, कोलकाता और पुणे में स्थित हैं।
- यह **फर्जी विश्वविद्यालयों,** स्वायत्त कॉलेजों, समविश्वविद्यालयों और दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की **मान्यता को भी नियंत्रित करता है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ugc-halts-phd-admissions-in-three-rajasthan-universities